5

व्यभिचार से कैसे बचें

(मत्ती 5:27-32)

यीशु ने यहूदी लोगों द्वारा बताए और यह कि उन्हें कैसे रहना चाहिए, में अन्तरों को शृंखला में बताया है। उन्हें छठी आज्ञा ''तू हत्या न करना'' का पता था (मत्ती 5:21; देखें निर्गमन 20:13), पर यीशु ने ज़ोर दिया कि क्रोधित विचार भी, जो हत्या का कारण बन सकता है, गलत है। इस पाठ में हम देखेंगे। यीशु ने पापपूर्ण कार्य से पापपूर्ण विचार के एक और अन्तर का उदाहरण देते हुए आगे बताया।

हमारे वचन पाठ का आरम्भ सातवीं आज्ञा ''तू व्यभिचार न करना'' से होता है (निर्गमन 20:14; मत्ती 5:27)। यहूदी लोग जानते थे कि परमेश्वर ने शारीरिक व्यभिचार को गलत ठहराया है, पर यीशु ने उन्हें बताया कि मानसिक और वैध बनाया गया व्यभिचार भी पाप है। मैंने इस पाठ का नाम ''व्यभिचार से कैसे बचें'' रखा है।

दिल को बचाएं (5:27-30)

विचारों की चौकसी करें (आयतें 27, 28)!

व्यभिचार से बचने के लिए पहले आप को अपने दिल की रक्षा करनी आवश्यक है। हमारे वचन पाठ का आरम्भ यीशु के यह कहने से होता है ''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, व्यभिचार न करना'' (आयत 27)। यह सातवीं आज्ञा की बात कर रहा था। अनुवादित शब्द ''व्यभिचार करना'' शब्द *moichos* से लिया गया है, जिसका अर्थ आमतौर पर उसके लिए होता है, ''जिसने अवैध रूप में किसी दूसरे के साथी के साथ सम्भोग किया हो।''[1] परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, वचन में बाद में इसका इस्तेमाल शारीरिक पाप के लिए शब्द से अधिक व्यापक है (*porneia* का एक रूप)। हमें सातवीं आज्ञा को हर प्रकार के शारीरिक पाप[2] यानी परमेश्वर द्वारा स्वीकृत विवाह के बाद दो जनों के बीच शारीरिक सम्बन्ध को गलत ठहराने वाली मानना चाहिए।

सातवीं आज्ञा मुख्यतया विवाह की रक्षा के लिए दी गई थी इसे तोड़ने का दण्ड भयंकर था (देखें लैव्यव्यवस्था 20:10; व्यवस्थाविवरण 22:22-27)। समस्या यह थी कि यहूदी शिक्षक स्पष्टतया केवल यही बताते थे कि व्यभिचार का वास्तविक कार्य गलत है। दसवीं आज्ञा यह संकेत देते हुए कि व्यभिचार से पूर्व की गई लालसा गलत है, पड़ोसी की पत्नी की लालसा करने को गलत ठहराती थी (निर्गमन 20:17); पर यहूदी शिक्षक स्पष्ट रूप में पाप की अवैध लालसा पर कम ज़ोर देते थे।

यीशु ने कहा व्यभिचार को जन्म देने वाला विचार भी व्यभिचार के जितना पाप है:[3] ''पर मैं[4]

तुम से यह कहता हूं, यदि कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले तो वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका'' (मत्ती 5:28)। बेशक, आयत 28 की जो बात पुरुष पर लागू होती है, वही स्त्री पर भी लागू होती है।[5] कोई भी स्त्री जो पुरुष को कामुक नज़रों से देखती है, वह उसके साथ मन में ही व्यभिचार कर चुकी है। ध्यान देने वाली बात यह है कि विचार ही कर्म बनते हैं (देखें मत्ती 15:19)। आमतौर पर दोहराई जाने वाली एक कहावत है:

बोओगे विचार तो काटोगे कर्म,
बोओगे कर्म तो काटोगे आदत,
बोओगे आदत तो काटोगे चरित्र,
बोओगे चरित्र तो काटोगे भविष्य।[6]

कर्मों को नियंत्रण में करने के लिए अपने विचारों को काबू में लाना आवश्यक है।

मुझे ऐसे अस्वीकरण जोड़ने पड़ेंगे। पहला यह कि यीशु केवल किसी स्त्री या पुरुष की ओर देखने की ही बात नहीं कर रहा था। सबसे कठोर फरीसियों को ''लहूलुहान फरीसी''[7] कहा जाता था। उन्हें यह नाम इसलिए दिया गया, क्योंकि इस डर से कि कहीं किसी स्त्री को देख न लें वे सिर झुका कर भूमि की ओर देखते हुए चलते थे। जिस कारण वे प्राय: पेड़ों, खम्भों और दीवारों से टकराते रहते थे, और उनके माथे से लहू बहने लगता था। यीशु लहू लुहान माथे की वकालत *नहीं* कर रहा था। उसने यह नहीं कहा कि ''जिस किसी ने स्त्री *की ओर* देखा उसने मन में उसके साथ व्यभिचार कर लिया।'' बल्कि उसने कहा कि ''जो कोई *स्त्री पर कुदृष्टि डाले*''[8] वह अपने मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका। एक बार मैंने एक वक्ता को यह कहते सुना था, ''सुन्दर फूल को देखने और उसकी प्रशंसा करने में कोई बुराई नहीं है, पर यदि वह फूल आप को *परेशान* करने लगे, तो उसके पास से भाग निकलें-जल्दी।'' जॉन. आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है, ''हम सभी देखने और कुदृष्टि डालने में अन्तर को समझते हैं''[9] और शायद उसकी बात सही है।

दूसरा अस्वीकरण है कि यीशु के मन में किसी के अपनी पत्नी या अपने पति की इच्छा की बात नहीं थी। यह इच्छा परमेश्वर द्वारा दी गई है और विवाह को मज़बूत बनाने (देखें उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:6) और मनुष्य जाति को बढ़ाने के लिए है (देखें उत्पत्ति 1:27, 28क)। ''कुदृष्टि'' शब्द का अनुवाद *epithumia* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''मज़बूत इच्छा'' है। इस शब्द का इस्तेमाल भली मंशा के लिए हो सकता है, पर आमतौर पर ''इसका बुरा अर्थ है''[10] जैसा कि यहां है। यीशु किसी के ऐसे व्यक्ति को वासना भरी नज़रों से देखने की बात कर रहा था, जो उस व्यक्ति की पत्नी या पति नहीं है।

कोई आपत्ति करता है, ''पर यह तो बहुत मुश्किल है। कामुक विचार तो मेरे दिमाग में यूं आ जाते हैं। मैं सच में उन्हें रोक नहीं सकता।'' मैं मानता हूं कि यह एक चुनौती है। मुझे मालूम है कि यह उतना मुश्किल है, जितना यीशु के समय में था, पर है यकीनन तौर पर मुश्किल। पश्चिमी जगत के लोग अनैतिक ''मनोरंजन'' और कामुक विज्ञापनों से घिरे रहते हैं।[11] मसीही मूल्यों के प्रति मीडिया की कोई सहानुभूति नहीं है और इंटरनेट पर तो पोर्नोग्राफी पर कोई नियंत्रण नहीं है। अपने मन को शुद्ध रखने का प्रयास करते रहना आवश्यक है, पर यह तभी हो सकता है जब

व्यक्ति यीशु के पीछे चलने को गम्भीर हो, जब बुरे विचार मन में बेलगाम आने लगें तो उन्हें आने न दें। मन को अच्छे विषयों पर लगाएं (देखें फिलिप्पियों 4:8), और उपयोगी गतिविधियों में व्यस्त हो जाएं।

जब सुधार के लिए ऑपरेशन आवश्यक हो (आयतें 29, 30)

और सुझाव दिए जा सकते हैं पर हम यीशु के उपचार की ओर ही चलते हैं। 29 और 30 आयतों मे उसके शब्द पहली बार सुनने पर चौंकाने वाले लगते हैं:

> यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काट कर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिए यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।

यह स्पष्टतया यीशु की पसन्दीदा बात थी। मत्ती 18:8, 9 में आपको ऐसी ही भाषा मिलेगी। अपने उदाहरण में यीशु ने आंख का इस्तेमाल शायद इसलिए किया क्योंकि आंख को आमतौर पर कामना के साथ जोड़ा जाता है। यूहन्ना ने ''आंखों की अभिलाषा'' की बात की (1 यूहन्ना 2:16)। देखने से आगे बढ़कर कर्म करने का संकेत देने में हाथ भी शामिल हो सकता है।

''ठोकर खिलाए'' का अनुवाद शिकार किए जाने के शब्द *skandalon* के क्रिया रूप का अनुवाद है, जो ''मूलतया 'फंदे के उस भाग का नाम था जिससे जाल लगा होता था।' '' इसका अर्थ फंदा हो गया था।[12] यीशु ने कहा कि यदि तेरी दहिनी आंख या तेरा दहिना हाथ तुझे मानसिक व्यभिचाार में पं साए तो इससे छुटकारा पा लेना ही बेहतर है।

इससे कई सवाल खड़े होते हैं। उनमें से कम महत्वपूर्ण एक यह है कि ''यीशु ने *दाईं* आंख और *दाएं* हाथ की ही बात क्यों कही?'' उसने दाएं हाथ की बात सम्भवतया इस लिए की होगी क्योंकि अधिकतर लोगों के लिए दायां हाथ अधिक कुशल है और इसके न होने से बहुत कठिनाई होगी। (जितना मैं लिखता हूं, दायां हाथ न होने पर बड़ी दिक्कत होगी और मुझे बाएं हाथ से लिखना सीखना पड़ेगा!) इसके अलावा, वचन में भी ''दाएं हाथ'' को सम्मान का स्थान दिया गया है (देखें मरकुस 16:19; प्रेरितों 2:33; कुलुस्सियों 3:1)।[13] दाईं आंख पर क्या कहा जा सकता है? यह दाएं हाथ के साथ ही चलती है। दाईं आंख बन्द कर लें तो पाएंगे कि दाएं हाथ की गति सीमित हो गई। दाईं आंख और दाएं हाथ के निकाले जाने से व्यक्ति के काम पर बहुत खतरनाक असर होगा।

यह हमें और महत्वपूर्ण प्रश्न पर ले आता है कि ''यीशु के यह कहने का क्या *अर्थ* था कि दाईं आंख या दाएं हाथ को निकाल कर फैंक दो?'' इतिहास बताता है कि कुछ आरम्भिक मसीही लोगों ने यीशु के शब्दों को अक्षरश: लिया और अपनी आंखें निकाल दीं, अपने हाथ काट लिए या वासना से बचने की कोशिश में और ऑपरेशन करवा लिया। हम यीशु की शिक्षा को कमज़ोर करने के दोषी नहीं बनना चाहते पर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उसकी बात को कम से कम तीन कारणों से अक्षरश: न लिया जाए:

- अक्षरश: व्याख्या *बेकार* होगी।[14] आंख या हाथ को निकाल देने से मन से वासना नहीं निकल जाएगी।
- अक्षरश: व्याख्या *तर्क विरुद्ध* होगी। दाईं आंख या दायां हाथ निकल जाने के बाद भी उसकी बाईं आंख और बायां हाथ तो रहेगा ही। वह अभी भी कुदृष्टि डाल सकता और वासन भरे काम कर सकता है।
- अक्षरश: व्याख्या *असंगत* होगी। यह नये नियम की शिक्षा से मेल नहीं खाएगा कि शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है और इसका दुरुपयोग या इसे खराब करने को मानती है (देखें 1 कुरिन्थियों 3:16, 17; 6:19, 20)।

इसलिए यीशु के शब्दों को *अक्षरश:* नहीं लिया जाना चाहिए; पर इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि उन्हें *गम्भीरता* से न लिया जाए। उसका रूपक प्रसिद्ध चिकित्सकीय सिद्धांत पर आधारित है: पूरे शरीर के जीवन को बचाने के लिए शरीर के खराब अंग को निकाल दिया जए। आज ऐसा आम होता है। पुराने ज़माने में भी गैंग्रीन हो जाने पर आमतौर पर यही माना जाता था कि व्यक्ति को जीवित रखने के लिए उसका गला हुआ अंग निकाल दिया जाना बेहतर है।[15] यदि उस अंग को निकाला न जाएं तो गैंग्रीन पूरे शरीर में फैल जाएगी, जिससे व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी। यानी यीशु कह रहा था कि तुम्हारे जीवन में *यदि कोई भी चीज़* तुम्हारे मानसिक व्यभिचार का कारण बनती है तो तुम्हें आत्मिक ऑपरेशन की अर्थात इसे अपने जीवन में से निकाल देने की आवश्यकता है। स्टॉट ने लिखा:

> परेशानी देने वाली आंखों [या] हाथों से छुटकारा पा लेने की आज्ञा ... हमारे प्रभु के नाटकीय अलंकारों के इस्तेमाल का नमूना है। वह सचमुच में शारीरिक कांट-छांट की नहीं बल्कि निर्दयता से अपने इनकार की वकालत कर रहा था। उसका सिखाया गया मार्ग शरीर को काटने का नहीं, शरीर को मारने का है ...।[16]

''मारना'' का अर्थ ''मृत्यु देना'' है। KJV के अनुसार पौलुस ने कहा कि ''आत्मा के द्वारा यदि तुम शरीर के कार्यों को *मारोगे* तो तुम जीओगे'' (रोमियों 8:13)। NASB में यह आयत इस प्रकार है, ''यदि आत्मा के द्वारा तुम देह के कामों को *मृत्यु दोगे* तो जीओगे।''[17] हमें रह बात को ''मारना'' आवश्यक है, जो हमारे विचारों को अशुद्ध बनाती है।

हम पूछ सकते हैं, ''पर यदि वह बात मेरे लिए बहुमूल्य हो?'' यीशु के समय में दायां हाथ और दाईं आंख को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था, और आज भी वे महत्वपूर्ण हैं। कोई बात, वह चाहे आपके दाईं आंख या दाएं हाथ के जितनी महत्वपूर्ण हो, यदि अशुद्ध विचारों को रखने को प्रोत्साहित करती है, तो उसे छोड़ देना या उससे दूर रहना ही बेहतर है।

इससे एक और सवाल उठता है, ''आप किस बात या वस्तु की बात कर रहे हैं?'' सामान्य सुझाव देते हुए मैं आपको इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाऊंगा। यीशु ने कहा, ''यदि तेरी दाहिनी आंख *तुझे* ठोकर खिलाए तो निकालकर अपने पास से फैंक दें; ... यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसको काटकर अपने पास से फैंक दे।'' *आपको* ठोकर किससे लगती है? *आप* के विचारों को अशुद्ध कौन करता है? कुछ पुस्तकें या पत्रिकाएं या अन्य प्रकाशन हो सकते

हैं।[18] टेलीविज़न का कोई कार्यक्रम या फिल्में हो सकती है। इंटरनेट हो सकता है। व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह हो सकता है, जिससे आप जुड़े हैं (1 कुरिन्थियों 15:33)। यह जो भी हो, यीशु ने कहा कि इसे अपने जीवन में से निकाल दें और इसे दूर फैंक दें।

एक अवसर पर यीशु के पीछे चलने वालों ने ऐसी शिक्षा के लिए कहा कि ''यह बात नागवार है; इसे कौन सुन सकता है?'' (यूहन्ना 6:60; KJV)। कइयों के लिए किसी भी बात या चीज़ को जो कामुक विचारों को भड़काती है, अपने जीवनों में से निकालना ''कठिन बात'' है। मत्ती 5:29 में एक अर्थ में यीशु ने पूछा, ''तुम्हारे लिए क्या महत्वपूर्ण है: तुम्हारी आंख और हाथ या फिर स्वर्ग में जाना?'' यीशु ने कहा, ''तेरे लिए यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।'' उसने यह बात दो बार कही ताकि हम इसे लापरवाही से न लें। मैं नरक में नहीं जाना चाहता; वहां जाने से बचने के लिए जो भी आवश्यक हो, मैं करूंगा! क्या आप को भी ऐसा नहीं लगता? यदि यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो कि आप नरक में न जाएं और आप स्वर्ग में ही *जाएं* तो उसके लिए किया गया कोई बलिदान अच्छा नहीं है?

अपने विचारों को शुद्ध रखने के सम्बन्ध में, पहले देखते हैं कि *हम* क्या कर सकते हैं? पौलुस ने हम सब को मसीह का मन रखने की चुनौती दी (फिलिप्पियों 2:2; देखें 4:8)। परन्तु हमें *प्रभु* से सहायता की भी आवश्यकता है। शरीर के कामों को मारने के योग्य हम ''आत्मा के द्वारा'' ही तो होते हैं (रोमियों 8:13)। परमेश्वर की सहायता से हमें पाप के साथ तुरन्त और निर्णायक ढंग से निपटना आवश्यक है। यीशु ने हमें *छीलने* को नहीं, बल्कि *काटने* को कहा है![19]

अपने विवाह की रक्षा करो (5:31, 32)

व्यभिचार से बचने का एक और उपाय अपने विवाह की रक्षा करना है। मानसिक व्यभिचार की बात करने के बाद 31 और 32 आयतों में यीशु ने उसकी बात की, जिसे हम ''वैध व्यभिचार'' कह सकते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि ये आयतें अलग-अलग हैं; पर क्योंकि वे व्यभिचार पर यीशु की शिक्षा को आगे बढ़ाती हैं, हम उन पर अभी विचार करेंगे।[20]

इस वचन को मैं थोड़े विस्तार के साथ लेता हूं। पहले तो ये आयतें बहुत ही विवादास्पद हैं। दूसरा, विचाराधीन विषय बहुत ही संवेदनशील है। मेरी इच्छा किसी के दर्द को बढ़ाने की नहीं है, पर यदि ''मैं परमेश्वर की सारी मंशा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझकता हूं'' (प्रेरितों 20:27) तो मैं परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में ईमानदारी से अपना काम नहीं कर रहा हूं।

जो कहा गया था (आयत 31)

यीशु ने पहले उसी का हवाला दिया, जो कालांतर में बताया गया था: ''यह भी कहा गया था, कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे तो उसे त्यागपत्र दे'' (मत्ती 5:31)। यह पुराने नियम से लिया गया हवाला नहीं है, बल्कि यह पुराने नियम के व्यवस्थाविवरण 24:1-4 पर आधारित वचन से लिया गया है। यीशु के समय में यहूदी लोग इस वचन का दुरुपयोग कर रहे थे। यदि कोई आदमी अपनी पत्नी को छोड़ना चाहता है, तो वह केवल तलाकनामा लिखकर देते हुए उसे निकाल सकता था। जबकि व्यवस्थाविवरण 24:1-4 का उद्देश्य यह नहीं था। इस वचन

पर ध्यान दें:

> ''यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। और जब वह उसके घर से निकल जाए, तब दूसरे पुरुष की हो सकती है। परन्तु यदि वह उस दूसरे पुरुष को भी अप्रिय लगे, और वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर उसके हाथ में देकर उसे अपने घर से निकाल दे, या वह दूसरा पुरुष जिस ने उसको अपनी स्त्री कर लिया हो मर जाए, व्यवस्थाविवरण तो उसका पहिला पति, जिस ने उसे निकाल दिया हो, उसके अशुद्ध होने के बाद उसे अपनी पत्नी न बनाने पाए क्योंकि यह यहोवा के सम्मुख घृणित बात है। इस प्रकार तू उस देश को जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके तुझे देता है पापी न बनाना।''

ध्यान दें कि चार आयतें एक ही लम्बा वाक्य है। त्याग पत्री का उल्लेख दो बार है या यह मुख्य उद्देश्य से जुड़ा संयोग है। मुख्य बात आयत 4 से पहले तक नहीं आती। इन आयतों का ज़ोर इस बात पर है कि यदि कोई पति अपनी पत्नी के तलाक दे देता है तो वह उसे फिर कभी विवाह न करने के जोखिम में डाल देता है।

क्या व्यवस्थाविवरण 24:1-4 तलाक को बढ़ावा देने के लिए दी गई थी? एक जगह यीशु ने ध्यान दिलाया कि परमेश्वर द्वारा इसकी अस्थाई छूट यहूदियों के पाप के कारण दी गई थी (मत्ती 19:8)। लैरी कैल्विन ने लिखा:

> पुराने नियम के समयों में, यहूदी पुरुष स्त्रियों से विवाह कर रहे थे, उनके दहेज को खा रहे और उन स्त्रियों को अपने हाल पर गलियों में निकाल रहे थे। फिर यहूदी पुरुष और देहज वाली स्त्रियां ढूंढ़ने के लिए बाहर निकल जाते थे।[22]

व्यवस्थाविवरण का यह वचन उन स्त्रियों को कुछ कानूनी सहायता देने के और तलाक पर रोक लगाने के उद्देश्य से दिया गया था। इस नियम के कम से कम दो पहलुओं से तलाक पर रोक लगी होनी चाहिए। (1) लिखित तलाकनामा देने की गलती की जाती थी। कोई पति अपनी पत्नी को घर से बिना कारण निकाल सकता था। कानूनी प्रक्रिया आवश्यक थी। (2) पत्नी को तलाक देने पर उसके किसी से विवाह कर लेने पर वह दोबारा उसकी पत्नी नहीं बन सकती थी।[23] यह सब स्पष्टतया इस लिए था कि जल्दबाजी में अपनी पत्नी को तलाक देने से पहले दो बार सोचें।

जो यीशु ने कहा (आयत 32)

यीशु उस बात से, जो उसके सुनने वालों को बताई गई थी, अपनी शिक्षा की ओर बढ़ा। उसके अगले शब्दों ने उसकी किसी भी बात से अधिक विवाद खड़ा किया ''परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवाय किसी और कारण से छोड़ दे,[24] तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है'' (मत्ती 5:32)।

यहां यीशु की शिक्षा की गहराई को पाने के लिए मत्ती 19:3-9 में इसी शिक्षा के बड़े

संस्करण को देखने से सहायता मिलती है। वह वचन उस स्थिति की गहराई में ले जाता है जिसका यीशु ने मत्ती 5 अध्याय वाले वचन कहे।[25]

फरीसियों ने यीशु के पास आकर उससे पूछा, ''तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिए पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?'' (मत्ती 19:3)। व्यवस्थाविवरण 24 अध्याय में पत्नी की ''किसी निर्लजता'' की बात करता है जिस कारण पति ने उसे तलाक दिया (आयत 1)। पहली सदी में यहूदी गुरुओं का एक समूह उस ''निर्लजता'' को शारीरिक बेवफ़ाई पर ज़ोर देता था। एक और समूह यह सिखाता था कि इसका अर्थ जिससे पति नाराज हुआ, रोटी जलाने से लेकर बूढ़ा होने और झुर्रियां तक कोई भी बात हो सकती है। इसीलिए फरीसियों ने यीशु ने पूछा, ''क्या *हर एक कारण से* अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?''

यीशु ने इसका उत्तर पीछे ले जाते हुए उत्पत्ति 1 और 2 से उद्धृत करके दिया कि परमेश्वर ने आरम्भ में विवाह की स्थापना कैसे की थी (मत्ती 19:4, 5)। उसने निर्णय दिया, ''सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे'' (आयत 6)। फरीसियों ने पूछा ''फिर मूसा ने क्यों यह *ठहराया,* त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे?'' (आयत 7)। यीशु ने उत्तर दिया कि तलाक आज्ञा नहीं बल्कि एक *रियायत* थी: ''मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की *आज्ञा दी,* परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था'' (आयत 8)। फिर यीशु ने वैसे ही शब्द कहे जैसे हमें अपने वचन पाठ में मिलते हैं (आयत 9)।

पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए हम मत्ती 5:31, 32 को देखते हैं। अभी के लिए अपवाद को नज़रअन्दाज़ करते हुए, यीशु ने कहा कि ''जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवाय किसी और कारण से तलाक दे, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है;[26] और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है।'' इस वचन में यह माना गया है कि तलाकशुदा पत्नी विवाह करेगी। उस ज़माने में आम तौर पर कोई स्त्री अपने आप अपना गुज़ारा नहीं चला सकती थी। यीशु ने कहा कि यदि तलाकशुदा स्त्री फिर से विवाह करती है तो वह व्यभिचार की दोषी है और जिस व्यक्ति से वह विवाह करेगी वह व्यभिचार का दोषी होगा? क्योंकि तलाकनामा ज़ारी होने के बावजूद परमेश्वर की नज़र में वह अभी भी वह अपने पहले पति की पत्नी है।

मत्ती 5 में यीशु ने केवल पुनर्विवाह करने वाली तलाकशुदा पत्नी की बात की। मत्ती 19 में उसने पुनर्विवाह करने वाले तलाकशुदा पति की बात की। दोनों मामलों में उसने कहा कि वे व्यभिचार के दोषी हैं। क्यों ''क्योंकि फिर से परमेश्वर की नज़र में वे अभी भी पति और पत्नी हैं।'' यीशु की बात याद रखें: ''इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे'' (19:6)।

अब उस अपवाद पर विचार करते हैं जो यीशु ने दिया। नियम यह था कि यदि कोई विवाहित व्यक्ति तलाक ले और फिर से विवाह कर ले, तो वह व्यभिचार का दोषी होगा या होगी। मानवीय अदालतों ने उस नियम के सैकड़ों अपवाद दे रखे हैं, पर यीशु ने केवल एक ही दिया। NASB में इसे इस प्रकार लिखा गया है: ''अस्तित्व के कारण को छोड़'' ''अस्तित्व'' का अनुवाद ''व्यभिचार'' के लिए शब्द *porneia* से किया गया है (देखें KJV)। *Porneia*

का अर्थ सामान्य इस्तेमाल में ''अवैध शारीरिक सम्भोग है।''[27] यह व्यापक शब्द है, पर इस पर बहस करने की कोई छूट नहीं है कि *porneia* किसी भी प्रकार का और हर प्रकार का अपराध आता है जिसे सेक्सुअल आधार होने के लिए कुछ स्पष्ट अर्थ में कहा जा सके।[28] यह एक शारीरिक कार्य है।

तो फिर नियम यह है कि यदि कोई विवाहित व्यक्ति तलाक लेकर फिर से विवाह करता या करती है तो वह व्यभिचार का दोषी है। इस नियम का एकमात्र अपवाद किसी के विवाह के साथी का व्यभिचार यानी किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सेक्सुअल सम्भोग के दोषी होना है।[29]

क्या परमेश्वर किसी व्यक्ति को उसकी पत्नी के बेवफा होने से तलाक लेने की आज्ञा देता है? हम उसी गलती को दोहराने के दोषी न बनें जो फरीसियों ने की थी। याद रखें कि तलाक पर शिक्षा एक रियायत है, न कि आज्ञा। यीशु ने कहा कि कोई तलाक ले *सकता* है न कि उसे तलाक लेना *आवश्यक* है। बेहतरीन परिस्थितियों में तलाक किसी परिवार के लिए विनाशकारी है।[30] यदि किसी को तलाक लेने का कथित ''वचन के अनुसार अधिकार'' है भी तो विवाह को फिर से बनाने की कोशिश करने के अच्छे कारण हो सकते हैं। तलाक पर किसी भी प्रकार की शिक्षा, क्षमा और मेल पर शिक्षा से सन्तुलित होनी आवश्यक है।

यह सब कहने के बाद मैं जल्दी से कहना चाहता हूं कि हमारे वचन पाठ में ज़ोर अपवाद पर नहीं बल्कि नियम पर है। यीशु हमें समझाना चाहता होगा कि विवाह *स्थाई* होने की मंशा से दिया गया है। विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना *जीवन भर के लिए* एक पुरुष, एक स्त्री का होना है।

मत्ती 5:31, 32 में यीशु के शब्दों को समझना इतना कठिन नहीं है, पर फिर भी उन से विवाद हो जाता है। उन्हें सुनने के बाद, लोग तुरन्त पूछते हैं, ''इस या उस परिस्थिति में क्या होना चाहिए?'' इस पाठ में मैं उन सभी प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास नहीं करूंगा जो पूछे जा सकते हैं। मैंने मत्ती 19:3-9 पर लिखा है और उन कुछ दृश्यों की चर्चा की है जो लोगों को परेशान करते हैं। बहुत पहले, मुझे समझ आया कि मैं हर जटिल वैवाहिक स्थिति को किसी प्रकार सुलझा नहीं सकता। मुझे कई उलझन भरे विवाह, तलाक और पुनर्विवाह की समस्याओं से दो चार होना पड़ा है। यदि मुझ में सुलैमान वाली बुद्धि भी होती तौभी मैं उन सभी मसलों को सुलझा नहीं पाता। उसका एक कारण यह है कि मैं सर्वज्ञ नहीं हूं। मैं नहीं जान सकता कि संक्षेप में क्या हुआ और लोगों के दिलों और मनों को पढ़ने का मेरे पास कोई तरीका नहीं है।

क्या इसका अर्थ यह है कि इस कारण मुझे कुछ करना नहीं चाहिए।[31] नहीं, वचन के सिखाने वाले और प्रचारक के रूप में मैं परमेश्वर के वचन को सुनाने में बाध्य हूं और इसमें मत्ती 5:31, 32; 19:3-9 भी शामिल हैं। यदि हम सतर्क नहीं हैं तो हम दुश्चक्र में फंस सकते हैं। हम इस विषय पर सिखाने में वैसे ही नाकाम हो जाते हैं जैसे हमें होना चाहिए। और इसका परिणाम यह होता है कि वे कुछ सीखने वाले तलाक ले लेते हैं और पुनर्विवाह कर लेते हैं। फिर हम इस बात से भयभीत हो जाते हैं कि हम तलाक लेने वालों की भावनाओं को आहत कर देंगे, जिस कारण इस विषय पर हम बुहत कम बताते हैं। परिणाम यह होता है कि वचन के बाहर और तलाक होते हैं। यह चक्र चलता रहता है बल्कि बहुत नीचे को चला जाता है। इस दृश्य के दुखद परिणामों में से एक यह है कि हमारे जवान जीवन के लिए विवाह के लिए परमेश्वर की

मंशा को जाने बिना बड़े हो रहे हैं। मैं सभी कलीसिया के अगुओं से आग्रह करना चाहता हूं कि इस बात पर ज़ोर दें कि आपके प्रचारक और सिखाने वाले मत्ती 5:31, 32; 19:3-9 में विवाह के लिए दी गई रूपरेखा के अनुसार परमेश्वर की मूल योजना को बताएं।

विवाह के स्थायीत्व की शिक्षा के अलावा हमें यह भी समझाने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का भय रखने वाले और प्रेम से भरा मसीही घर कैसा होना चाहिए। इसके अलावा हमें उन दम्पत्ति के साथ भी काम करने की आवश्यकता है जिनके विवाह में समस्याएं हैं। हमें उन्हें भी शान्ति देनी चाहिए जिनके जीवन तलाक से बर्बाद हुए हैं। पौलुस ने लिखा, ''तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो'' (गलातियों 6:2)। फिर उसने कहा, ''कायरों को ढाढ़स दो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:14)।

कई बार कलीसिया के अगुओं को ऐसे वैवाहिक सम्बन्धों से निपटना पड़ता है जिनमें यह स्पष्ट होता है कि विवाह के लिए परमेश्वर के नमूने की अनदेखी की गई है। कुरिन्थुस की कलीसिया में, एक आदमी के पास अपने पिता की पत्नी थी[32] (1 कुरिन्थियों 5:1) उस मामले में पौलुस ने कलीसिया का उस आदमी से पीछे हट जाने को कहा (आयतें 3-5, 7, 11)। परन्तु अधिकतर परिस्थितियों में उपयुक्त कार्य इतना स्पष्ट नहीं होता। उन मामलों में, अगुओं को बुद्धि के लिए प्रार्थना करनी (याकूब 1:5) और जो बन सके करना आवश्यक है। अन्त में जिम्मेदारी तो तलाक लेने वाले की है। हम सिखा सकते हैं और प्रचार कर सकते हैं और समझा सकते हैं और सलाह दे सकते हैं और प्रोत्साहन दे सकते हैं, परन्तु परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने की जिम्मेदारी हर किसी के अपनी है। रोमियों 14:12 कहता है, ''सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा।''

यीशु ने विवाह के स्थायीत्व पर और इस तथ्य पर कि वचन से बाहर तलाक व्यभिचार का कारण बनता है, ज़ोरदार ढंग से सिखाया। परन्तु उसने किसी भी परिस्थिति को जो उठ सकती है वैधानिक बनाने का कोई प्रयास नहीं किया। उसने मूल नियम बताए और फिर इसे अपने जीवनों में और उन विभिन्न वैवाहिक परिस्थितियों में जिन में हम अपने आपको पाते हैं लागू करना अपने पर छोड़ दें। यह जिम्मेदारी कितनी भयभीत करने वाली है! परमेश्वर हम सब को अपनी इच्छा को जानने और उसे मानने की समझ, बुद्धि और साहस दे!

मैं मत्ती 5:31, 32 पर अपनी चर्चा को नकारात्मक टिप्पणी देकर छोड़ना नहीं चाहता। कहते हैं कि यदि हमें इस वचन को तलाक और पुनर्विवाह के जवाब न मिलें प्रश्न के अलावा किसी और बात के कारण से छोड़ते हैं तो हमें इसके वास्तविक तथ्य और महत्व की समझ नहीं आई। यीशु का उद्देश्य तलाक को बढ़ावा न देना, अर्थात विवाह को बचाना था। विवाह के लिए परमेश्वर की योजना जीवन भर के लिए एक पुरुष और एक स्त्री की है। काश मुझे कोई तरीका पता हो जिससे इस पर उस तरीके से ज़ोर दे पाऊं जिसके यह योग्य है। मुझे कुर्सी पर खड़े और चिल्लाते हुए हेाने की कल्पना करें: *''एक पुरुष, एक स्त्री, जीवन भर के लिए-विवाह के लिए परमेश्वर की यही योजना है!''* जितना हम इस योजना के निकट आते हैं उतना ही परमेश्वर को आदर मिलेगा और उतना ही हमारे जीवन आशीषित होंगे।

सारांश

हमारा पाठ व्यभिचार अर्थात शारीरिक पाप के अरुचिकर विषय पर केन्द्रित है। इस पाप के सम्बन्ध में इससे निपटने का सबसे बढ़िया ढंग इससे बचना है। हमारे वचन पाठ में इससे बचने के दो ढंग सुझाए गए हैं। पहला, अपने मन को वासना भरे विचारों से गिरने इसे इसकी रक्षा करें। दूसरा, इसके स्थायीपन के लिए अपने आपको समर्पित करते हुए अपने जीवन साथी के प्रति वफ़दार रहकर अपने विवाह की रक्षा करें।

यीशु ने सिखाया कि हमें केवल शारीरिक व्यभिचार की ही चिन्ता नहीं करनी चाहिए बल्कि मानसिक व्यभिचार, बल्कि कानूनी व्यभिचार की भी चिन्ता करनी चाहिए। सांसारिक सोच वाले लोग किसी भी रूप में व्यभिचार पर चिन्ता नहीं करते, पर परमेश्वर की सन्तान को इसकी चिन्ता है। पौलुस के अनुसार, शारीरिक पाप विशेष रूप से परमेश्वर की दृष्टि में भयानक है (देखें 1 कुरिन्थियों 6:18)। परन्तु इस बात को समझें कि अन्य किसी भी पाप की तरह, व्यभिचार का पाप बुरा तो है पर यदि कोई मन फिराए तो उसे क्षमा किया जा सकता है। 1 कुरिन्थियों 6 में पौलुस ने ''परस्त्रीगामियों'' और ''व्यभिचारियों'' की बात की (आयत 9) और फिर कहा, ''तुम में से कितने ऐसे ही *थे,* परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर की आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे'' (आयत 11)। यदि आप किसी भी रूप में व्यभिचार के पाप, या किसी अन्य पाप से झूझ रहे हैं, और हम आपकी सहायता कर सकते हैं, तो हमें अवश्य बताएं।

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 14. [2]कइयों का मानना है कि दस आज्ञाएं दिए जाने के बाद मूसा द्वारा दिए गए कई नियम उन मूल आज्ञाओं का विस्तार हैं। यदि ऐसा है तो ''तू व्यभिचार न करना'' में विवाहित व्यक्ति के शारीरिक पाप में संलिप्त होने से कहीं बढ़कर पाप हैं क्योंकि अगले नियमों में कई प्रकार के शारीरिक पाप आते हैं (देखे निर्गमन 22:16, 17, 19)। [3]आप फिर से इस भ्रमित विचार से निपटना चाह सकते हैं कि मन में वासना रखने वाला व्यक्ति आगे बढ़कर व्यभिचार भी कर सकता है। [4]यूनानी धर्मशास्त्र में ''।'' शब्द पर जोर दिया गया है। [5]परमेश्वर पक्षपात नहीं दिखाता (देखें प्रेरितों 10:34)। [6]सेमुएल स्माइल्स, *बार्टलेट'स फैमिलयर क्वोटेशंस,* 16वां संस्करण, संपा. जस्टिन कैपलन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कं., 1992), 781. [7]ई. स्टेनली जोन्स, *दि क्राइस्ट ऑफ़ द माउंट* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन प्रैस, 1931), 148. [8]यूनानी धर्म शास्त्र में अक्षरश: अर्थ ''लोभ [वासना] के विचार से'' (अल्फ्रेड मार्शल, *दि इंटरलिनियर ग्रीक इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट,* दूसरा संस्क. [लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1958], 12)। [9]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ सरमन ऑन दि माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1978), 87. [10]वाइन, 384.

[11]जहां आप रहते हैं वहां के समाज के अनुकूल इस पद्य को बदल लें। [12]वाइन, 441. [13]यदि आपके सुनने वाले इससे परिचित हो तो ''वह मेरे दाहिने हाथ है'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल कर सकते हैं। [14]कलोविस जी. चैप्पल, *दि सरमन ऑन द माउंट* (नैशविल्ले: अबिंग्डन-कोक्सबरी प्रैस, 1930), 157. [15]''गैंगरीन'' उस अवस्था को कहा गया है जिसमें संक्रमण या रक्त के कम बहाव के कारण मांस गल जाता है (आमतौर पर काला पड़ जाता है)। कालांतर में प्रभावित भाग को काटकर निकालने सहित गैंगरीन वाले भाग को निकालने के कई ढंगों का इस्तेमाल होता था। [16]स्टॉट, 89. [17]एक और आयत जो ''आत्म दमन'' या ''मारने'' की बात करती है वह कुलुस्सियों 3:5 है (देखें KJV; NASB)। [18]जहां आप रहते और परिश्रम करते हैं वहां की स्थिति के अनुकूल इस पद्य को बदल

लें। [19]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोजिशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनॉय: विक्टर बुक्स, 1989), 24. [20]कई कारक इस बात का संकेत देते हैं कि यह भाग पिछली आयतों के विषय का अगला भाग हो सकता है: (1) आयत 31 अन्य भागों के आरम्भिक शब्दों कर तरह आरम्भ नहीं होती। (2) KJV में आयतें 27-32 एक ही पद्य में हैं। (3) जैसा कि कहा गया है कि वे व्यभिचार पर यीशु की शिक्षाओं को आगे बढ़ाती है।

[21]व्यवस्थाविवरण 24:2 में माना गया है कि वह पुनर्विवाह करेगी, क्योंकि अविवाहित स्त्री के लिए सहायता का कोई और साधन नहीं होगा। [22]लैरी कैलविन, *दि पावर जोन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 85. [23]कइयों का मानना है कि यह उपाय आज भी लागू होता है। याद रखें कि यह मनाही पुराने नियम में है। [24]मरकुस में इससे मिलते-जुलते पद्य में पत्नी के अपने पति को तलाक देने की बात शामिल है (मरकुस 10:12)। जैसा पाठ में पहले कहा गया है, नियम पुरुष और स्त्रियों दोनों के लिए हैं। [25]हम मत्ती 19:3-9 का अध्ययन विस्तार से नहीं करेंगे। मेरा उद्देश्य मत्ती 5:31, 32 को बेहतर समझने के लिए पृष्ठभूमि देना है। [26]मत्ती 5:31, 32 में यीशु ने मामले में पति के दोष पर जोर दिया। पुनर्विवाह करने वाली तलाकशुदा पत्नी व्यभिचार की दोषी थी परन्तु तलाक लेने वाला पति उसे उस कठिन परिस्थिति में डालने का दोषी था, क्योंकि पुनर्विवाह न करने पर उसके पास अपने निर्वाह का कोई साधन न होता, परन्तु परमेश्वर की नज़र में दोनों दोषी थी। [27]वाइन, 252. [28]स्टॉट, 97. [29]कई लोग यह सिखाते हैं मरकुस 10:11, 12 और लूका 16:18 में अपवाद की बात नहीं है इस कारण तलाक का कोई वैधानिक कारण नहीं है। बाइबली व्याख्या का मूल नियम विषय पर परमेश्वर की *बात* को लेना है। मत्ती 5:32 और 19:9 में अपवाद दिया गया है। [30]यह निश्चित रूप में एक कारण है कि परमेश्वर ने कहा कि वह तलाक से घृणा करता है (मलाकी 2:16)।

[31]सामान्य होने के बावजूद यह टिप्पणियां कुछ तलाकों वाले समाज के बजाय उस समाज से अधिक मेल खाती है जहां तलाक आम है। जहां आप काम करते हैं वहां की परिस्थिति के अनुकूल बनाने के लिए पाठ के इस भाग को बदल लें और विस्तार दें। [32]आमतौर पर यह माना जाता है कि यह स्त्री उस आदमी की सौतेली मां थी।